International Journal of Pharmaceutical Research and Applications
Volume 8, Issue 3 May-June 2023, pp: 1718-1719 www.ijprajournal.com ISSN: 2249-7781

अधिगम में विद्यार्थियों की संलग्नता और सक्रिय भागीदारी

Sarika Saxena
उच्च प्राथमिक विद्यालय – पथरा
वि ख – आलमपुर जाफराबाद
जिला – बरेली

Submitted: 15-05-2023 Accepted: 30-05-2023

शिक्षक के रूप में आप यह अवश्य चाहते होंगे कि आपके विद्यार्थी अपनी शिक्षा से यथासंभव सर्वश्रेष्ठ परिणामों को हासिल करें। इससे उन्हें अप tvने जीवन में मौकों और अनुभवों को हासिल करने के लिए अंतदृष्टि और अवसर प्राप्त हों तो यह कार्य करना इतना मुश्किल भी नही हैं । बस आपको आवश्यकता है छात्र केंद्रित शिक्षण प्रणालियों को जानने की । हो सकता है कई परिवार के बच्चे पहली बार स्कूल जाते हैं, जो कि उनके लिए रोमांचक और चुनौतीपूर्ण दोनों होता है इसीलिए कक्षा का वातारण रूचिपूर्ण और रचनात्मक होना चाहिए। इससे बच्चे जाने के लिए और उद्धेश्य पूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्सहित होंगे। उनकी रुचि और रचनात्मकता को संवेग प्रदान करता है, उन्हें स्कूल जाते रहने के लिए प्रोत्साहित करता है ।कक्षा के भौतिक परिवेश तथा सामाजिक एवं भावनात्मक माहौल का आपके विद्यार्थियों की पढ़ाई पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ता है। स्वयं के लिए और अपने विद्यार्थियों के लिए सम्मान पोषित पढ़ाई का सकारात्मक माहौल तैयार करने का काम कई प्रकार से से किया जा सकता है जिसे बहुत कम या शून्य खर्च पर आसानी से किया जा सकता है । आप निष्प्रयोजित सामग्री का उपयोग करके छात्रों के साथ मिलकर भी शिक्षण अधिगम सामग्री को तैयार कर सकते हैं । इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक छात्र के बीच आत्मीयता बढ़ने के साथ साथ विषवस्तु की तरफ छात्रों की रोचकता बढ़ती है ।

शिक्षण की गतिविधियां उस समय सर्वाधिक प्रेरणादायक होती हैं, जब वे विद्यार्थियों को या तो समस्या का व्यावहारिक रूप से अन्वेषण करने के लिए जोड़ते है। या समस्या के समाधान के द्वारा चिंतन के कौशलों को विकसित करने के लिए सक्रिय रूप से जोड़ते हैं। शिक्षक के रूप में आपको इस पथ पर अपने विद्यार्थियों को अग्रसर करने के लिए पहल करनी होती है ।गतिविधि में सक्रिय भागीदारी और विद्यार्थियों की सलंग्नता सुनिश्चित करना भी हमारा कार्य है , जब बच्चे किसी विशेष गतिविधि में नियमित रूप से भाग लेते हैं, तो उनमें सीखने की गहन क्षमता विकसित होती है। बच्चों की सक्रिय और सकारात्मक भागीदारी सीखनेकेलिए अवश्य होती है। कोशि श करें कि बच्चे लंबे समय तक निष्क्रिय श्रोता बनकर न रहें। बच्चों को स्वयं करके

सीखनेवाली गतिविधियाँ दी जानी चाहिए जैसे - प्रयोग, अवलोकन, परियोजना आदि। बच्चों को कक्षा में वाद-विवाद और बातचीत में भाग लेनेकेलिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उन्हें यह फै सला लेने के लिये भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का आकलन करने के उपरांत ही शिक्षण योजना का निर्माण अगर आपके द्वारा किया जाता है तो निःसंदेह आप अपने छात्रों को कक्षा शिक्षण में रूचि लेता हुआ पाएंगे । : बच्चों को किसी घटना या विचार को शि क्षक अपने शब्दों में समझानेके अवसर दें। बच्चों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे समझें कि उदाहरण द्वारा किसी सिद्धांत को कै से दर्शाया जा सकता है।

विभि न्न विषयों में शि क्षक बच्चों की किसी विशष समस्याओं का हल ढूँढ़ने में सहायता दे सकते हैं। जैसे-जैसे बच्चों में कुशलता आती जाती है वैसे-वैसे समस्याएँ और भी जटिल होती जाती हैं। जब बच्चे विषय-वस्तु को समझ लेते हैं तो वे समानताएँ और भि न्नताएँ पहचानने में भी समर्थ हो जाते हैं। वे तलुना करके अतंर जान सकते हैं और समझकर अपना उत्तर दे सकते हैं ।अभिभावक और परिवार के शामिल होने से बच्चों के सीखने और उनकी वृद्धि को बढ़ावा मिलता है। उन्हें पूर्वप्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर परिवार की सहभागिता केलिए प्रोत्साहित किया

International Journal of Pharmaceutical Research and Applications
Volume 8, Issue 3 May-June 2023, pp: 1718-1719 www.ijprajournal.com ISSN: 2249-7781

जाना चाहिए। विशष आवश्यकता वाले बच्चों की क्षमताओंको पहचान कर शरुआती स्तर पर ही हस्तक्षेप (intervention) द्वारा उनके विकास को बढ़ावा देने से सीखने में विलंब नहीं होता है और उनकेविकास की गति बढ़ जाती है। इससेविशेष शिक्षा सेवा की आवश्यकता कम हो जाती है और धन की बचत भी होती है। शरुआती हस्तक्षेप से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें बच्चे की आवश्यकताओं के अनसार सीखने-सिखानेकी प्रक्रिया के स्वरूप में फेरबदल किया जाता है,

इसका उद्श्दे य बच्चों के साथ-साथ उनके माता-पिता की भी प्रत्यक्ष रूप से मदद करना है। शरुआुती हस्तक्षेप कई प्रकार से किया जा सकता हैं। जैसे - भाषा और वाक् उपचार (थेरेपी) के द्वारा सुननेकी क्षमता में सधुार किया जा सकता है और श्रवण सहायक मशीन के उपयोग को सगम बनाया जा सकता है।

फिजियोथेरेपी के द्वारा गत्यात्मक वृद्धि और कौशलों के विकास में सहायता मिलेगी जैसे- संतलुन बनाना, बैठना, घूटने के बल चलना, पैरों पर खड़े होकर चलना आदि। 'विकास कार्य थेरेपी' हाथ की संचालन क्षमता, संज्ञानात्मक, सामाजिक, मानसिक और स्वयं की दखभाल सबंधी कौशलों का विकास करती है।

कोई भी सहायक टेक्नॉलॉजी के समावेश से विशष आवश्यकता वाले बच्चों को भली प्रकार से अपनी प्रतिभा को निखारने में मदद मिलेगी, जिसकी बच्चों को आवश्यकता है। शि क्षक को बच्चों के शरूआती विकास कक्षा में ऐसे बदलाव सुनिश्चितकरने चाहिए जिनसे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में रुकावट न आए यानि कि वे बाधारहित हो मूल्यांकन की प्रक्रिया का सजृन ऐसा हो जो विविध अक्षमताओं वाले बच्चों के अनकु ूल हों